सरस किशोरी, वयस कि थोरी, रति सर बोरी, कीजै कृपा की कोर Bhajans Bhakti Songs

सरस किशोरी, वयस कि थोरी, रति सर बोरी,
कीजै कृपा की कोर।

साधन हीन, दीन मैं राधे, तुम करुणामई प्रेम-अगाधे,
काके द्वारे, जाय पुकारे, कौन निहारे, दीन दुखी की ओर।

करत अघन नहिं नेकु उघाऊँ, भरत उदर ज्यों शूकर धावूँ,
करी बरजोरी, लखि निज ओरी, तुम बिनु मोरी, कौन सुधारे दोर।

भलो बुरो जैसो हूँ तिहारो, तुम बिनु कोउ न हितु हमारो,
भानुदुलारी, सुधि लो हमारी, शरण तिहारी, हौं पतितन सिरमोर।

गोपी-प्रेम की भिक्षा दीजै, कैसेहुँ मोहिं अपनी करी लीजै,
तव गुण गावत, दिवस बितावत, दृग झरि लावत, ह्वैहैं प्रेम-विभोर।

पाय तिहारो प्रेम किशोरी !, छके प्रेमरस ब्रज की खोरी,

Source:

https://www.bharattemples.com/saras-kishori-vayas-ki-thori-rati-ras-bori-pad-by-jagatguru-kripalu-ji-maharaj/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw